साहित्य कला परिषद्

19वाँ वार्षिक नाट्य समारोह

16-22 मार्च, 1990

श्रीराम सैंटर, मंडी हाउस, नई दिल्ली

Tue/20th March

TIRICH

Tirich is an obsessive and gruelling account of the cruelty of the city. In this narrative structure Tirich is whimsical, grotesque and bizarre. Its space often feverish and eccentric. The incident itself centres round the killing or rather lynching of an innocent old man when goes to the city but the old man is also bitten by a Tirich a magical lizard. The village people are convinced that any body bitten by Tirich shall die 24 hours after he is bitten. The old man is doomed.

But the incident itself is not the story. The story is told to us by the old man son, who had gone to the city later and visited the various places where the father may has gone. In effect it is also told to us many persons who had something to do with the incident. This process of piling up of layers of truth on the true truth gives. Tirich the ambiguity that one finds so often in real life.

On Stage

Rajendra Tiwari
Sita Ram Singh
Jyoti
Usha Datta
Master Peyush
S.N.A. Jaffery
Prabhakar Vaid
Manohar Khushlani
Sanjay Gandhi
Kuldeep Sarin
K.C. Sharma

Back Stage

Set	–	K.C. Sharma & Abdul
Costume	–	Anima Naveen
Properties	–	Sanjay Gandhi
Light	–	Avtar Sahni
Music	–	Sushil Kumar & Prasanna
Graphic	–	Parthiv Shah
Stage Manager	–	Ram Chander Shilke

Design & Direction : **PRASANNA**

Group : **EKATRA**

तिरिछ : कठिन प्रयोग

दूसरी शाम के लिए पूर्व घोषित नाटक के स्थान पर दिल्ली की नाट्य संस्था 'एकत्र' ने **'तिरिछ'** का मंचन किया। कवि-कथाकार उदय प्रकाश की इस आदि से अन्त तक वर्णनात्मक कहानी को मंच पर लाए निर्देशक प्रसन्ना।

यह कहानी शहर की क्रूरता को, शहरातियों की निर्मम मनोवृत्ति को रेखांकित करती है। मंच पर लाने के लिए प्रसन्ना ने मूल कथा में परिवर्तन किए हैं। लेकिन नाटक में 'फ्लैश बैक' और 'फ्लैश फारवर्ड' का इस्तेमाल नाटक को जटिल बनाता है। वह बौद्धिकों की बहस और रंग मंचीय कल्पनाशीलता के लिए चर्चित हो सकता है लेकिन एक सामान्य दर्शक इस नाटक को ठीक से समझ नहीं सकता। फिर इसमें प्रभाववाद और यथार्थवाद का मिश्रण भी मुश्किलें पेश करता है।

बेशक प्रसन्ना की परिकल्पना सुन्दर है।खासतौर पर प्रकाश व्यवस्था। इसके लिए प्रकाश संचालक अवतार सिंह साहनी की तारीफ जरूरी है। प्रसन्ना और सुशील कुमार का संगीत नाटक के अनुरूप था। लेकिन निराश किया अभिनेताओं ने। युवा सूत्रधार के रूप में राजेन्द्र तिवारी और महिला मित्र के रूप में ज्योति बिल्कुल फीके रहे। प्रौढ़ सूत्रधार के रूप में सीताराम सिंह जरूर कहानी के 'नानू' के काफी निकट पहुंचे।

प्रसन्ना 'तिरिछ' का मंचन दिल्ली में पहले कर चुके हैं। वहां 'पिता' की भूमिका में प्रख्यात चित्रकार मनजीत बाबा को मंच पर लाने के लिए काफी चर्चित रहे थे। इस बार उस भूमिका में कहानी लेखक उदय प्रकाश खुद थे। पूरी कहानी 'पिता' को केन्द्र में रख कर घूमती है लेकिन यह चरित्र एक बार भी मंच पर मुंह नहीं खोलता। ऐसे चरित्र के लिए पहले मनजीत बाबा और बाद में उदय प्रकाश को लाना निर्देशक की कल्पनाशीलता को उजागर करता है।

देहरादून में प्रसन्ना के अनुभव बहुत कड़वे रहे। प्रेस फोटोग्राफरों और पत्रकारों के साथ झड़प के अलावा मेरे ख्याल से प्रेक्षागृह की खाली कुर्सियों ने यों भी उन्हें तनावग्रस्त बनाया होगा।

लेखक उदय प्रकाश से हुई बातचीत में मालूम पड़ा कि प्रख्यात रंगकर्मी सफदर हाशमी भी इस कहानी से प्रभावित थे और इसे नाटक के रूप में खेलना चाहते थे। काश सफदर का 'ट्रीटमेंट' भी हम देख पाते। कुल मिलाकर 'तिरिछ' को रंगमंचीय प्रयोग के लिए प्रसन्ना के साथ याद जरूर किया जाएगा।

नवभारत टाइम्स, लखनऊ ६ अक्टूबर १९८९